संवाद

फिर आ गया नया साल। नया साल अपने साथ लेकर आता है अनगिनत सपने, अनेकानेक आशाएँ और उम्मीदों का अनंत आकाश। साल बीतने में कुछ ही दिन शेष रह जाते हैं कि हम सभी नए साल की बेसब्री से प्रतीक्षा करने लगते हैं और साथ ही शुरू कर देते हैं स्वागत की तैयारियाँ। नए साल के स्वागत की तैयारियों में जुटे हम सभी मन-ही-मन यह भी सोचते हैं कि जो काम किसी कारणवश इस साल पूरे नहीं कर पाए उन्हें इस नए साल में कार्य रूप में परिणित करेंगे। इस प्रकार नया साल जगाता है नयी उम्मीदें और नयी आशाएँ हम सभी देखने लगते हैं नए-नए सपने और इन सपनों को पूर्ण करने के लिए लेते हैं नए-नए संकल्प।

हर अभिभावक अपने बच्चे के सुनहरे भविष्य के सपने देखता है। आज हर अभिभावक चाहता है कि उसका बच्चा पढ़े। छः से चौदह वर्ष तक के सभी बच्चों को शिक्षित करने के उद्देश्य से सर्व शिक्षा अभियान वर्ष 2000 से संपूर्ण देश में लागू किया गया। जिसके परिणामस्वरूप विद्यार्थियों के नामांकन में वृद्धि हुई, शाला त्याग की दर में भी काफ़ी कमी आई। लेकिन शिक्षा की गुणवत्ता में अपेक्षित सुधार नहीं हुआ। आँकड़े दर्शाते हैं कि अभी भी ऐसे कई बच्चे हैं जो किसी-न-किसी कारणवश विद्यालय नहीं जा पाए हैं। ऐसे में 1 अप्रैल 2010 से लागू निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार विधेयक का आना इस दिशा में मील का पत्थर है। यह विधेयक बच्चों को शिक्षा का अधिकार देने के साथ ही शिक्षक को निर्देश देता है कि बालकेंद्रित शिक्षण पद्धति अपनाते हुए आत्मीयता के साथ भयमुक्त वातावरण में बच्चों को शिक्षा दें। वास्तव में शिक्षक और विद्यार्थी में परस्पर स्नेहिल संबंध कायम हो जाएँ तो विद्यार्थी को सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ते देर नहीं लगती। हर अभिभावक अनेक सपने सँजोए अपने बच्चे को विद्यालय भेजता है। नन्हे बच्चे भी अपनी आँखों में अनेक सपने लिए विद्यालय की दहलीज़ में कदम रखते हैं। शिक्षक भी जब शिक्षा जगत् में प्रवेश करता है, तो वह भी अनेकानेक सपने लिए आता है-कुछ नया कर दिखाने का, एक अच्छा शिक्षक बनने का। वह बच्चों का प्रिय शिक्षक बनना चाहता है। शिक्षक का बच्चों के साथ ही नहीं बल्कि उनके अभिभावकों के साथ भी मित्रवत् व्यवहार हो, निरंतर संवाद हो तो बच्चों की अनेक कठिनाईयों का अत्यंत सरलता और सहजता से निवारण हो सकता है।

शिक्षक, अभिभावक और बच्चे सभी के सपने हकीकत का जामा पहन लें, इसके लिए कवि दुष्यंत कुमार के शब्दों में हम नए साल में आप सबको शुभकामनाएँ देते हैं —

जा तेरे स्वप्न बड़े हों
भावना की गोद से उतरकर
जल्द पृथ्वी पर चलना सीखें
चाँद-तारों की अप्राप्य ऊँचाइयों के लिए
रूठना-मचलना सीखें
हँसे-मुस्कराएँ, गाएँ
हर दिए की रोशनी देखकर ललचाएँ
ऊँगली जलाएँ
अपने पाँव पर खड़े हों
जा तेरे स्वप्न बड़े हों।

अकादमिक संपादक